रोज गूंथती हूं पहाड़

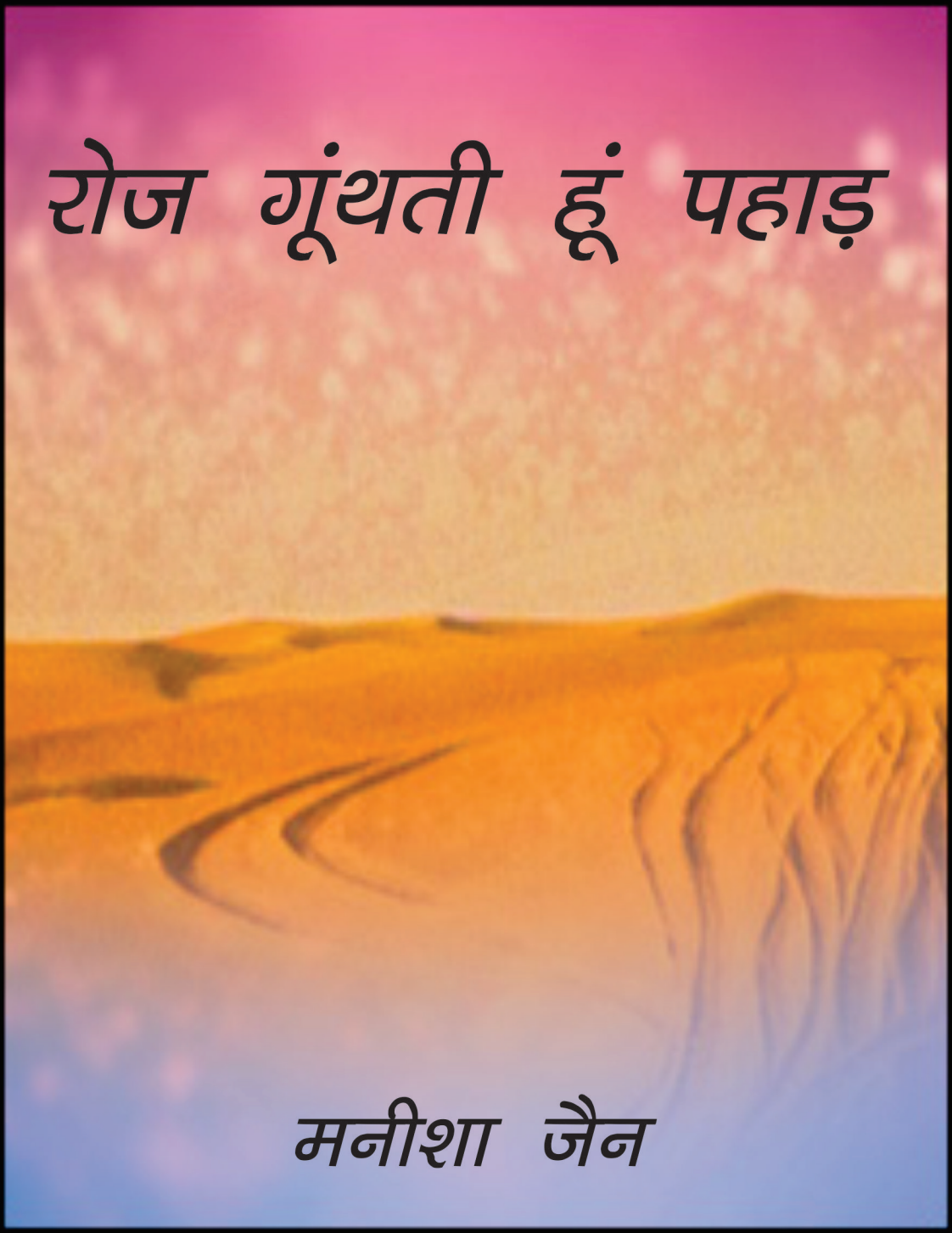

मनीशा जैन

परिचय

नाम- मनीशा जैन

जन्म- 24 सितंबर, मेरठ

शिक्षा- एम ए हिन्दी साहित्य, यू जी सी नेट,

वर्तमान - शोध छात्रा, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

प्रकाशित कृति - एक काव्य संग्रह 'रोज गूंथती हूं पहाड़' प्रकाशित।

हायकु व रेखाचित्र संग्रह शीघ्र प्रकाश्य,

दूसरा काव्य संग्रह शीघ्र प्रकाशय

प्रकाशित साझा काव्य संग्रह - 1-सारांश समय का, 2-कविता अनवरत

पत्र पत्रिकाओं में कविता प्रकाशन- लोक स्वामी, नई धारा, गाथांतर, उम्मीद, संप्रेषण, नया पथ, अलाव, वर्तमान साहित्य, संप्रेषण, मुक्तिबोध, बयान, साहित्य भारती, आकंठ, कृतिओर, रचनाक्रम, जनसत्ता, विपाशा (हिमाचल प्रदेश), भाषा स्पंदन (बेंगलूर), छत्तीसगढ़ मित्र, परिकथा, जनपथ, अभिनव इमरोज, , आगमन आदि

समीक्षाओं का प्रकाशन- डा. सुनीता जैन-ओक भर जल, टेशन सारे, हेरवा की समीक्षा, डा. जितेन्द्र श्रीवास्तव-बिलकुल तुम्हारी तरह कायातंरण की समीक्षा, कवि विजेन्द्र-आंच में तपा कुंदन 'बंूद तुम

ठहरी हो क्यों 'आलोचना केन्द्रित पुस्तक, बनते मिटते पांव रेत में प्रकाशनाधीन, एकान्त श्रीवास्तव-धरती अधखिला फूल है की समीक्षा, संतोश चतुर्वेदी के काव्य संग्रह-दक्षिण का भी अपना पूरब होता है-लमही, सुधा ओम ढ़ीगरा-हिन्दी चेतना, आनंद स्वरूप श्रीवास्तव-नीम की दुनिया में हम, डा. कमल कुमार-घर और औरत-प्रकाशनाधीन, डा. पद्मजा शर्मा - मैं बोलूंगी-कृति ओर

आलेख- गीतकार-नईम-अलाव, कवि नागार्जुन-अलाव, मीरा का संघर्ष-युद्धरत आम आदमी, अज्ञेय-साहित्य भारती लखनउ, सत्यं शिवं में समाई है लोक कविता-कृति ओर, महावीर प्रसाद द्विवेदी-आचार्य स्मारिका, शमशेर-साहित्य भारती, प्रेमचंद-साहित्य भारती, स्त्री विषयक लंबा आलेख हमरंग ई पत्रिका में, साझा पुस्तक में प्रकाशनाधीन,

कविता के अंर्तराष्ट्रीय बेव पोंटल कविता कोश में कविताएं सम्मिलित।

जनसत्ता तथा अभिनव इमरोज़ में बाल कविताएं प्रकाशित।

पहली कहानी -चाय का खाली मग, 'सिर्फ तुम' कहानी संग्रह में संकलित

मधुमती, लोकस्वामी, जनसत्ता, विपाशा, जनपथ, परिकथा, रचनाक्रम, अनुसिरजण, शैक्षिक दख़ल, गाथातंर आदि विभिन्न पत्रिकाओं में रेखाचित्र प्रकाशित।

सम्मान - भारतीय साहित्य सृजन संस्थान पटना से कथा सागर सम्मान-2013

संप्रति- स्वतंत्र लेखन, संपर्क- 165 ए, वेस्टर्न एवेन्यू, सैनिक फार्म, नई दिल्ली-110080

रोज गूंथती हूं पहाड़

भमिका - यह मनीशा जैन का पहला संग्रह है। पिछले कुछ वर्षों में पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनकी छोटी-छोटी कविताओं ने काव्य प्रेमियों और आलोचकों का ध्यान अपनी ओर खींचा हैं। वाक् स्फीति से भरे समय में वाक् संयम की इन कविताओं से कवयित्री के दृढ़ निश्चय का पता चलता है। यह समय की धारा के विपरीत तैरने का साहस है।

दिल्ली में गौरैयों की अनुपस्थिति से सरकार भी चिंतित है लेकिन कवि चिंता सरकारी चिंता की तरह रस्मी नहीं होती। सरकारें अक्सर प्रदर्शन का सौंदर्यशास्त्र रचती हैं जबकि सच्चा कवि जीवनपर्यंत प्रदर्शन का ही प्रत्याख्यान करता है। मनीशा जैन की कविताएं आत्मा के अकुलाहट का गायन हैं। इन कविताओं में अब तक न मिले अपने हिस्से के आसमान को पाने का संकल्प है और उड़ने की तीव्र लालसा भी।

मनीशा जैन भीतर के वीराने के विरूद्ध उम्मीद की इबारत लिखती हैं। यहां प्रेम जीवन की शर्त है। वहीं सक्रिय और सुदंर जीवन का जीवद्रव्य है। 'रोज गूंथती हूं पहाड़' और कुछ अन्य कविताएं मनीशा की स्त्री-दृष्टि का पता देती हैं। इन कविताओं में दुख के पार जाने की अदम्य लालसा है। ये रोशनी की चादर ओढ़ने की आकांक्षा रखने वाली कविताएं हैं। कुल मिला कर यह उम्मीद जगाने वाल संग्रह है। इसे पढ़कर यह आशा बंधती है कि मनीशा जैन आने वाले दिनों में अधिक परिवक्व और प्रभाव मुक्त कविताएं लिखेंगी। इस संग्रह के लिए बधाई।

- जितेन्द्र श्रीवास्तव

रोज गूंथती हूं पहाड़

1

नदी को देखा तो

मैनें नदी को देखा
देखती रही उसे
बहुत देर तक
मैने उसे बुलाया
धीरे- धीर
नदी समाने लगी मुझमें
नदी की अंर्तगुफायें
खुलने लगी मुझमें
और नदी की
सहनशीलता
भरने लगी मुझमें
और फिर
एक नदी सी
बहने लगी मुझमें।

2.

नदी मेरे भीतर

मेरे करीब से
एक नदी निकल गई
मैं ठहरी रही एक पल
पर नदी चल दी
अब सोचती हूं

जब नदी आयेगी
मैं चल दूंगी
और नदी ठहर जायेगी
अबकी मैं नदी से कहूंगी
तू चलती जा
मैं ठहर जाउं
तेरे किनारों पर
तेरे मुहानों पर
तेरा चलना ही अच्छा
मेरा ठहरना ही अच्छा
इस तरह नदी और मैं
देखकर नदी में
अपना अक्स उतार लूंगी
नदी अपने भीतर।

3.

अपनी खुशी

सुबह से शाम फिर
शाम से सुबह तक
संवारती है घर, परिवार, बच्चे
इस चक्रव्यूह में
हो जाती है उम्र तमाम
नहीं देखती खुद को
सिर्फ देखती है दूसरों की खुशी
बस!
और जिंदगी के आखिरी छोर तक
ढूंढती है